पाठ 26

1. फ़िरौन को स्वप्न किसने दिए?

-परमेश्वर।

2. परमेश्वर ने फिरौन को पहला स्वप्न क्या दिया था?

-सात पतली गायों ने सात मोटी गायों को खा लिया।

3. परमेश्वर ने फिरौन को दूसरा स्वप्न क्या दिया?

-सात मोटी बालें सात मोटी बालें खा गईं।

4. फिरौन के स्वप्नों की समझ यूसुफ को किसने दी?

-परमेश्वर।

5. फिरौन के दोनों सपनों का क्या मतलब था?

-सात साल की अच्छी फसल सात साल के अकाल में खा जाएगी।

6. जब यूसुफ अभी बालक था तब परमेश्वर ने जो स्वप्न यूसुफ को दिए थे, उन्हें कैसे पूरा किया?

-परमेश्वर ने यूसुफ को सारे मिस्र पर राजा बनाया।

7. याकूब अपने पूरे परिवार को मिस्र क्यों ले गया?

-क्योंकि यूसुफ मिस्र में रहता था।

-क्योंकि मिस्र में बहुत भोजन था।

-जब याकूब और उसके पुत्र और उनके कुल सब मिस्र देश को चले गए, तब उनकी गिनती सत्तर थी।

आइए पढ़ें निर्गमन 1:1-5

1- इस्राएल के पुत्रों के नाम ये हैं, जो अपने अपने परिवार समेत याकूब के साथ मिस्र गए।

2-रूबेन, शिमोन, लेवी, और यहूदा;

3-इस्साकार, जबूलून, और बिन्यामीन;

4-दान और नप्ताली; गाद और आशेर।

5 याकूब की सन्तान सब मिलाकर सत्तर हो गए; यूसुफ पहले से ही मिस्र में था।

-नया नाम क्या था जिसे परमेश्वर ने याकूब को दिया था?

-इजराइल।

-इब्राहीम, इसहाक और याकूब के वंशजों को इस्राएल या इस्राएली भी कहा जाता था।

-याकूब, उसका पुत्र, यूसुफ, और उसके भाई, और उनके परिवार मिस्र में बहुत वर्ष तक रहे।

-अकाल समाप्त हो गया, और यूसुफ और उसके भाई मिस्र में रहने लगे।

-उनके पिता याकूब की मृत्यु हो गई, और यूसुफ और उसके भाई मिस्र में रहने लगे।

-बाद में, यूसुफ और उसके भाई मर गए, और इस्राएली मिस्र में रहने लगे।

आइए पढ़ें निर्गमन 1:6

6 यूसुफ और उसके सब भाई, और उस पीढ़ी के सब लोग मर गए।

-इसलिथे कि इस्राएली कनान देश में फिर न लौटे, और मिस्र में बहुत वर्ष तक रहे, वे बहुत हो गए।

आइए पढ़ें निर्गमन 1:7

7 परन्तु इस्राएली फूले-फले, और बहुत बढ़ते गए, और इतने अधिक हो गए, कि देश उन से भर गया।

-बहुत वर्षों के बाद मिस्र का राजा फिरौन मर गया।

-फिर उसकी जगह एक नए फिरौन ने ले ली।

-नया फिरौन पहले फिरौन की तरह दयालु नहीं था।

-नया फिरौन बहुत दुष्ट था।

आइए पढ़ें निर्गमन 1:8-11

8-तब एक नया राजा, जो यूसुफ के विषय में नहीं जानता था, मिस्र में सत्ता में आया।

9- "देखो," उसने अपने लोगों से कहा, "इस्राएली हमारे लिए बहुत अधिक हो गए हैं।

10-आओ, हम उनसे चतुराई से व्यवहार करें, नहीं तो वे और भी अधिक हो जाएंगे, और यदि युद्ध छिड़ जाए, तो वे हमारे शत्रुओं से मिल जाएंगे, हम से लड़ेंगे, और देश छोड़ देंगे।

11 सो उन्होंने उन पर दास-स्वामी ठहराए, कि वे उन पर बन्धुआई से अन्धेर करें, और उन्होंने पितोम और रामसेस को फिरौन के भण्डार नगरोंके रूप में बसाया।

-नए फिरौन ने इस्राएलियों के साथ क्या किया?

-फिरौन ने सब इस्राएलियों को दास बना लिया।

-फिरौन ने इस्राएलियों को दास क्यों बनाया?

-क्योंकि फिरौन को डर था कि इस्राएली उसके देश पर अधिकार कर लेंगे।

-फिरौन को क्यों डर था कि इस्राएली उसके देश पर अधिकार कर लेंगे?

-क्योंकि इस्राएली बहुत से लोग बन गए थे।

-इस्राएलियों को गुलाम बनाने के लिए फिरौन का मार्गदर्शन कौन कर रहा था?

-शैतान।

-शैतान इस्राएलियों को क्यों नष्ट करना चाहता था?

-क्योंकि शैतान जानता था कि परमेश्वर ने इस्राएलियों के माध्यम से उद्धारकर्ता को भेजने का वादा किया था।

-शैतान परमेश्वर से नफरत करता है।

-शैतान सभी लोगों से नफरत करता है।

-शैतान नहीं चाहता था कि परमेश्वर इस्राएलियों के द्वारा उद्धारकर्ता को भेजे।

-शैतान नहीं चाहता था कि उद्धारकर्ता आए और लोगों को बचाए।

-शैतान आप सभी से नफरत करता है।

-शैतान नहीं चाहता कि आप परमेश्वर का संदेश सुनें।

-शैतान चाहता है कि आप सभी अनन्त अग्नि की झील में जाएँ।

-भले ही शैतान इस्राएल को नष्ट करना चाहता था, परमेश्वर ने उनकी रक्षा की।

-भले ही शैतान इस्राएल को नष्ट करना चाहता था, परमेश्वर ने उन्हें आशीष दी।

-परमेश्वर ने इस्राएलियों को आशीष क्यों दी?

-क्योंकि परमेश्वर इस्राएलियों से प्रेम करता था।

-क्योंकि परमेश्वर अब्राहम, इसहाक और याकूब से किए गए अपने वादे को नहीं तोड़ेगा।

आइए पढ़ें निर्गमन 1:12-14

12 परन्तु इस्राएलियों पर जितना अधिक अन्धेर किया गया, वे उतने ही बढ़ते और फैलते गए; इसलिथे मिस्री इस्राएलियोंसे डरने को आए

13-और उन पर बेरहमी से काम किया।

14-उन्होंने ईंट और गारे के कठोर परिश्रम से, और सब प्रकार के खेतों में काम करके अपना जीवन कड़वा कर दिया; मिस्रियों ने अपनी सारी कड़ी मेहनत में उनका बेरहमी से इस्तेमाल किया।

-भले ही फिरौन ने इस्राएल पर अधिक से अधिक अत्याचार किया, फिर भी परमेश्वर ने इस्राएल को अधिक से अधिक आशीर्वाद दिया।

-फिर एक दिन शैतान ने फिरौन को दूसरा बुरा विचार दिया।

आइए पढ़ें निर्गमन 1:15-22

15 मिस्र के राजा ने शिप्रा और पूआ नाम इब्री दाइयों से कहा,

16- “जब तू इब्री स्त्रियों की प्रसव के समय सहायता करे, और उन्हें प्रसव के स्टूल पर देखे, यदि वह लड़का हो, तो उसे मार डालना; परन्तु यदि लड़की हो तो उसे जीवित रहने दो।”

17 परन्तु दाइयों ने परमेश्वर का भय माना, और मिस्र के राजा के कहने के अनुसार न कीं; उन्होंने लड़कों को रहने दिया।

18 तब मिस्र के राजा ने दाइयों को बुलाकर उन से पूछा, तुम ने ऐसा क्यों किया? तुमने लड़कों को जीने क्यों दिया?”

19 दाइयों ने फिरौन को उत्तर दिया, कि इब्रानी स्त्रियां मिस्री स्त्रियोंके समान नहीं हैं; वे हृष्ट-पुष्ट हैं और दाइयों के आने से पहले ही जन्म देती हैं।”

20-इस प्रकार परमेश्वर दाइयों पर दया करता था और लोग बढ़ते गए और और भी अधिक होते गए।

21 और दाइयां परमेश्वर का भय मानती थीं, इसलिये उस ने उन्हें उनके अपने कुल दिए।

22 तब फिरौन ने अपक्की सारी प्रजा को यह आज्ञा दी, कि जितने बालक उत्पन्न हों, वे सब नील नदी में डाल देना, परन्तु एक एक लड़की जीवित रहे।

- शैतान ने फिरौन को दूसरा बुरा विचार क्या दिया था?

-शैतान ने फिरौन को यह विचार दिया कि सभी इस्राएली लड़कों को मार डाला जाए।

-क्या परमेश्वर को पता था कि शैतान ने इस्राएलियों को नष्ट करने की योजना बनाई थी?

-हां।

-क्या परमेश्वर शैतान को इस्राएलियों को नष्ट करने की अनुमति देने वाला था?

-नहीं।

-परमेश्वर ने देखा और इस्राएलियों की रक्षा की।

- परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र से निकालकर कनान देश में वापस ले जाने की भी योजना बनाई।

- परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र से निकालकर कनान देश में मूसा नाम के एक व्यक्ति के द्वारा वापस लेने की योजना बनाई।

-यहाँ मूसा की कहानी है:

आइए पढ़ें निर्गमन 2:1-4

1- लेवी के घराने के एक पुरूष ने एक लेवीवंशी स्त्री से ब्याह लिया,

2 और वह गर्भवती हुई और उसने एक पुत्र को जन्म दिया। जब उसने देखा कि वह एक अच्छा बच्चा है, तो उसने उसे तीन महीने तक छुपाया।

3-परन्तु जब वह उसे छिपा नहीं सकती थी, तो उसने उसके लिए एक पपीरस की टोकरी लायी और उस पर टार और पिचकारी का लेप लगा दिया। तब उसने बच्चे को उसमें रखा और नील नदी के किनारे नरकटों के बीच रख दिया।

4- उसकी बहन कुछ दूर खड़ी थी यह देखने के लिए कि उसका क्या होगा।

-मूसा के पिता और माता ईश्वर में विश्वास करते थे।

-मूसा के पिता और माता का मानना था कि परमेश्वर उनके बच्चे की रक्षा करेगा।

-इसलिए, परमेश्वर ने उन्हें बच्चे मूसा को एक टोकरी में रखने और टोकरी को नील नदी में रखने का विचार दिया।

-क्या परमेश्वर ने उनके बच्चे मूसा की रक्षा की?

आइए पढ़ें निर्गमन 2:5-10

5-तब फिरौन की बेटी स्नान करने को नील नदी पर गई, और उसके सेवक नदी के किनारे टहल रहे थे। उसने सरकण्डों के बीच टोकरी देखी और अपनी दासी को उसे लेने के लिए भेजा।

6-उसने उसे खोला और बच्चे को देखा। वह रो रहा था, और वह उसके लिए खेद महसूस कर रही थी। "यह हिब्रू बच्चों में से एक है," उसने कहा।

7 तब उसकी बहिन ने फिरौन की बेटी से पूछा, क्या मैं जाकर इब्री स्त्री में से किसी एक को तेरे लिथे दूध पिलाऊं?

8- "हाँ, जाओ," उसने उत्तर दिया। और लड़की ने जाकर बच्चे की माँ को ले लिया।

9 फिरौन की बेटी ने उस से कहा, इस बालक को ले जाकर मेरे लिथे दूध पिला, तब मैं तुझे चुका दूंगी। तब स्त्री ने बच्चे को लेकर उसका पालन-पोषण किया।

10 जब बालक बड़ा हुआ, तब वह उसे फिरौन की बेटी के पास ले गई, और वह उसका पुत्र हुआ। उसने यह कहकर उसका नाम मूसा रखा, कि मैं ने उसे जल में से निकाला।

-परमेश्वर ने मूसा की रक्षा के लिए दुष्ट फिरौन की बेटी को भेजा।

-परमेश्वर ने दुष्ट फिरौन की बेटी को मूसा को गोद लेने के लिए भेजा।

-और मूसा दुष्ट फिरौन और उसकी बेटी के साथ रहा।

-परमेश्वर ने फिरौन की बेटी को मूसा को गोद लेने के लिए क्यों भेजा?

-क्योंकि परमेश्वर ने मूसा के द्वारा इस्राएलियों को मिस्र से बाहर निकालने की योजना बनाई थी।

-क्योंकि परमेश्वर ने मूसा के द्वारा इस्राएलियों को दासता से बाहर निकालने की योजना बनाई थी।

-परमेश्वर जानता था कि मूसा फिरौन के घर में सुरक्षित रहेगा।

-परमेश्वर जानता था कि मूसा फिरौन के घर में पढ़ना और लिखना सीखेगा।

-परमेश्वर जानता था कि मूसा फिरौन के घर में और भी बहुत कुछ सीखेगा जो उसे इस्राएलियों का नेतृत्व करने में मदद करेगा।

-फिरौन इस्राएलियों को नष्ट करना चाहता था, लेकिन परमेश्वर ने इस्राएलियों की रक्षा की।

-शैतान और उसके दुष्टात्माएँ भी इस्राएलियों को नष्ट करना चाहते थे, परन्तु परमेश्वर ने उनकी रक्षा की।

-क्या कोई इंसान परमेश्वर के काम को रोक सकता है?

-नहीं।

-क्या कोई दानव परमेश्वर के काम को रोक सकता है?

-नहीं।

-क्या शैतान परमेश्वर के कार्य को रोक सकता है?

-नहीं।

-परमेश्वर सर्व शक्तिशाली हैं।

-परमेश्वर ने इस्राएल की रक्षा की, और वह उन सभी की रक्षा करेगा जो उस पर विश्वास करते हैं।

-मूसा फिरौन के घर में पला-बढ़ा, और बड़ा होकर मनुष्य हुआ।

-एक दिन मूसा यह देखने के लिए निकला कि इस्राएली गुलामी में कितना कष्ट झेल रहे हैं।

आइए पढ़ें निर्गमन 2:11-14

11-एक दिन जब मूसा बड़ा हुआ, तो वह वहां गया जहां उसके अपके लोग थे, और उन को उनके कठिन परिश्रम के समय देखता रहा। उसने देखा कि एक मिस्री अपने ही लोगों में से एक इब्रानी को पीट रहा है।

12-उसने इधर-उधर देखा, और किसी को न देख कर उस ने मिस्री को घात किया, और उसे बालू में छिपा दिया।

13- दूसरे दिन उसने बाहर जाकर दो इब्रियों को लड़ते देखा। उसने गलत व्यक्ति से पूछा, "तुम अपने साथी हिब्रू को क्यों मार रहे हो?"

14-उस व्यक्ति ने कहा, “किस ने तुझे हमारा शासक और न्यायी बनाया? क्या तुम मुझे वैसे ही मारने की सोच रहे हो जैसे तुमने मिस्री को मार डाला था?” तब मूसा ने डर कर सोचा, कि जो कुछ मैं ने किया वह प्रगट हो गया होगा।

-क्या इस्राएली फिरौन से अपने आप को बचाने में सक्षम थे?

-नहीं।

-मूसा ने इस्राएलियों को फिरौन से बचाने की कोशिश की, और मिस्रियों में से एक को मार डाला।

-लेकिन फिरौन को पता चला कि मूसा ने एक मिस्री को मार डाला था।

-फिरौन ने क्या किया?

आइए पढ़ें निर्गमन 2:15

15 यह सुनकर फिरौन ने मूसा को घात करने का प्रयत्न किया, परन्तु मूसा फिरौन के पास से भागा, और मिद्‌यान देश में रहने चला गया।

-फिरौन को पता चला कि मूसा ने एक मिस्री को मार डाला।

-तो फिरौन ने मूसा को मारने की कोशिश की।

-मूसा डर गया, और भाग गया।

-मूसा मिद्‌यान देश की ओर भागा।

-क्या मूसा इस्राएलियों को फिरौन से बचाने में सक्षम था?

-नहीं।

-मूसा ने इस्राएलियों को फिरौन से बचाने की कोशिश की, लेकिन वह नहीं कर सके।

-केवल वही कौन था जो इस्राएलियों को फिरौन से बचाने में सक्षम था?

-परमेश्वर।

-केवल कौन है जो लोगों को शैतान से बचा सकता है?

-परमेश्वर।

-जैसे इस्राएलियों को फिरौन ने बंदी बना लिया था, वैसे ही सभी लोगों को शैतान ने बंदी बना लिया था।

-जिस तरह इस्राएली फिरौन से खुद को बचाने में सक्षम नहीं थे, उसी तरह सभी लोग खुद को शैतान से नहीं बचा पा रहे हैं।

-जैसे मूसा इस्राएलियों को फिरौन से बचाने में सक्षम नहीं था, वैसे ही कोई अन्य व्यक्ति हमें शैतान से नहीं बचा सकता है।

-जिस तरह केवल परमेश्वर ही इस्राएलियों को फिरौन से बचाने में सक्षम था, केवल परमेश्वर ही सभी लोगों को शैतान से बचाने में सक्षम है।

-अगले पाठ में हम मूसा के बारे में और जानेंगे।